डॉ० करुणा राय
एसोशिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
श्री गुरु गोविन्द सिंह
कॉलेज, पटना सिटी
E.Mail- karuna-1812
@yahoo.co.in

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्ष
पत्र - चतुर्थ
हिन्दी साहित्य का इतिहास इकाई - 2:2
भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं रचनाकार

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति आंदोलन का व्यापक महत्व है। इस आंदोलन का असर साहित्य पर भी पड़ा। इसी धार्मिक एवं साहित्यिक आंदोलन ने हिंदी साहित्य को कबीर, जायसी, तुलसी, सूर और मीरा जैसे कवि दिए। इन कवियों की कविता का स्वर मानवतावादी है। उन्होंने संकीर्ण मनोवृत्ति से ऊपर उठकर मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए जनता को प्रेरित किया। जाति प्रथा, कर्मकांड और सामंती मनोवृत्ति का उन्होंने विरोध किया। इस दृष्टि से भक्त कवियों की कविता को प्रतिरोध की कविता कहा जा सकता है। भक्त कवियों ने भारतीय जनता में गहरा आत्मविश्वास जगाया जिससे जनता का आत्मबल दृढ़ हुआ। शुक्लजी ने भक्ति आंदोलन के प्रेरक तत्वों की चर्चा करते समय मुगलों के आक्रमण और उनके फलस्वरूप स्थापित शासन की चर्चा की है। किंतु हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि भक्ति आंदोलन की शुरुआत दक्षिण भारत से हुई जो मुस्लिम आक्रमणकर्ताओं से कम प्रभावित रहा था। हिन्दी भाषा की जनश्रुति है —

"भक्ति द्रविड़ ऊपजी लाए रामानंद।
प्रगट किया कबीर ने सप्तद्वीप नवखंड।"

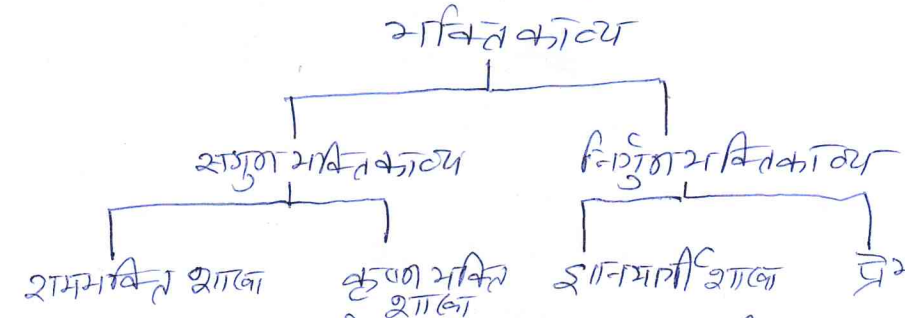

द्विवेदी जी और आधुनिक आलोचक डॉ० नामवर सिंह भी यह मानते हैं कि भक्ति आंदोलन लोक शक्ति और शास्त्र के मध्य चल रहे द्वंद्व का प्रतिफल थी। भक्ति आंदोलन की अभिव्यक्ति मुख्यतः चार मार्गों में हुई — ज्ञानमार्गी, प्रेममार्गी, कृष्णमार्गी और राममार्गी। इनमें प्रथम दो निर्गुण भक्ति परंपरा से संबंधित हैं और शेष दो सगुण भक्ति परंपरा से। एक चार्ट के द्वारा आप इसे अच्छी तरह से समझ सकते हैं—

- भक्तिकाव्य
  - सगुण भक्तिकाव्य
    - रामभक्ति शाखा
    - कृष्ण भक्ति शाखा
  - निर्गुण भक्तिकाव्य
    - ज्ञानमार्गी शाखा
    - प्रेममार्गी शाखा

सगुण भक्ति काव्य के कवि ईश्वर के सगुण रूप की उपासना करते हैं। सगुण रूप अर्थात जिसका रूप लक्षित किया जा सके। जिसके आँख, कान, मुँह हो और जो मनुष्यों के मध्य अवतार लेकर लीला करने आया हो। जबकि निर्गुण ब्रह्म के उपासक ईश्वर को निराकार मानते हैं अर्थात ईश्वर का कोई साकार रूप नहीं है वह कण-कण में विद्यमान है। उसको सभी लक्षित नहीं कर सकते। सिर्फ जो ज्ञानी हैं अथवा जो ईश्वर से प्रेम करते हैं वे गुरु की कृपा से उसे जान सकते हैं। सगुण भक्तों में जिसने राम की लीलाओं का या चरित का बखान किया वे रामभक्त कवि

कहलाये और जिन्होंने कृष्ण की लीलाओं का गान किया वे कृष्णभक्ति शाखा के कवियों में गिने गये। निर्गुण ब्रह्म की उपासना करनेवाले जिन भक्तकवियों ने ज्ञान का आश्रय लेकर ईश्वर की प्राप्ति की चेष्टा की है उन्हें ज्ञानमार्गी कवि कहा गया और जिन्होंने ईश्वर को अपने प्रिय के रूप में प्राप्त करने की चेष्टा की वे प्रेममार्गी कवि कहलाये। अब मैं उन कवियों के नाम निर्दिष्ट करूँगी जो इन प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि कवि हैं।

निर्गुण ज्ञानमार्गी संत कवि – नामदेव – ये महाराष्ट्र के रहनेवाले थे इनका जन्म सं० 1329 में हुआ था। वे दर्जी थे अतः वे गज, कैंची और सुई धागे के माध्यम से ही भक्ति रहस्य का उद्घाटन करते थे। मराठी में रचित अभंग इनके प्रसिद्ध भजन हैं।

कबीरदास (संवत - 1456 - 1575) इनका प्रामाणिक जीवन वृत्त नहीं मिलता। ज्यादातर किंवदन्तियाँ ही प्रचलित हैं। कहानी है कि उनका जन्म काशी की एक विधवा ब्राह्मणी के घर में हुआ था जिसने लोकलाज के भय से उन्हें काशी के लहरतारा तालाब के निकट छोड़ दिया था। इनका पालन पोषण नीरू और नीमा नामक जुलाहा दम्पत्ति ने किया। रामानन्द इनके गुरु थे। वे शिक्षित न होते हुए भी ज्ञानी थे। उन्हें अपने ज्ञान की आंधी से समाज में फैले अंधविश्वास, भेदभाव, तथा कुरीतियों का विरोध किया और तब ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग बताया। आत्मविश्वास के धनी कवि कबीर कहते थे कि – "तू (किताबी ज्ञान के विद्वान) कहता कागद (कागज) की लेखी, मैं कहता हूँ आँखिन देखी।" इसी आधार पर उन्होंने साखी, (साक्षी - गवाह), शबद, रमैनी और पद लिखे। इन्होंने हिन्दू और मुसलमान दोनों को एक स्वर में फटकारा ताकि वे अपने धर्म में व्याप्त कुरीतियों का त्याग करें, फिर भी वे दोनों धर्मों के लोगों में लोकप्रिय थे। इनकी वाणी का संग्रह उनके शिष्यों ने 'बीजक' के नाम से किया है। इन्होंने विविध प्रतीकों के द्वारा अपनी बात लोगों तक पहुँचाई।

रैदास – यह भी निर्गुण कवि थे संभवतः कबीर के समकालीन भी थे। वे वर्णाश्रम व्यवस्था के विरुद्ध थे। ये मीराबाई के गुरु के रूप में प्रसिद्ध हैं।

इन कवियों के अतिरिक्त गुरुनानक देव, संत दादू दयाल, संत सुंदरदास तथा संत मलूकदास भी प्रसिद्ध निर्गुण भक्त कवि हैं जो ज्ञानमार्गी हैं। इन संत कवियों की रचनाओं में कुछ विशिष्ट प्रवृत्तियाँ हैं जो उभरकर सामने आती हैं।

भक्ति निरूपण – संत कवियों ने भक्ति के अनुभूति पक्ष को महत्त्व दिया है। वो यह मानते हैं कि निर्गुण ब्रह्म की उपासना ज्ञान से ही संभव है। अहम् के त्याग पर वे सर्वाधिक बल देते हैं। उन्होंने आत्मनिवेदन के द्वारा ईश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा को व्यक्त किया है। नाम (ईश्वर का) स्मरण को वे प्रमुख मानते थे। कबीर ने भी 'राम' नाम को महत्त्व दिया है, हालाँकि वे निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे।

सामाजिक चेतना – मध्यकालीन समाज में व्याप्त कुराजकता के प्रति वे निरपेक्ष नहीं रह सके। छोटी कहे जानेवाली जातियों के लोगों ने भी ईश्वर के नाम पर जातिवाद के विरुद्ध आंदोलन किया। कबीर ने कहा कि मेरे दुख का कारण यह है कि मैं चैतन्य हूँ, सबकुछ देखता, समझता हूँ किन्तु जो अज्ञानी हैं वे सिर्फ खाने-पीने और सोने को ही ज्ञान मानते हैं। इसी कारण वे ज्ञान का प्रचार करते थे –

सुखिया सब संसार है, खावै और सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै और रोवै॥"

कबीर स्वयं भी जाग्रत थे और लोगों को भी जाग्रत कराने की चेष्टा जीवनभर करते रहे।

सद्गुरु की महत्ता - संत कवियों ने सांसारिक माया के अवगुणों से बचाने के लिये तथा ज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति के लिये सद्गुरु की महत्ता बतायी। कबीर ने तो एक दोहा भी लिखा है - जिसमें गुरु को ईश्वर से भी श्रेष्ठ माना है। "गुरु गोविन्द दोनों खड़े, काके लागूँ पाँव।
बलिहारी गुरु आपणी जिन गोविन्द दियो मिलाई॥

नाम स्मरण - संत कवियों ने भगवान के नाम का सदैव स्मरण करते रहने पर बल दिया है। कबीर भी रामानन्द गुरु के कहने पर राम राम कहते रहे। हालाँकि उनके राम दशरथ पुत्र नहीं हैं, ब्रह्म हैं। वे लिखते हैं - 'दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना।' 'राम' का नाम भर उन्होंने लिया है उनके अवतार स्वरूप को और मानव लीला को वे नहीं स्वीकारते।

रहस्यवाद - रहस्यवाद का अर्थ जानना कठिन नहीं है। जब ब्रह्म का उपासक अपनी साधना में इतना तल्लीन हो जाता है कि उसमें और ब्रह्म में कोई अंतर नहीं रह जाता तब उस मनःस्थिति का प्रकाशन रहस्यवाद की सृष्टि करता है। आत्मा और परमात्मा ~~के स्वरूप दोनों है~~ माया का ~~आवरण हट जाता है।~~ वस्तुतः एक ही हैं, सिर्फ माया के कारण वे अलग - अलग हैं। माया का आवरण हटते ही वे एक हो जाते हैं। इसके तीन स्तर हैं। प्रथम, आत्मा परमात्मा की ओर आकर्षित होती है; द्वितीयतः उससे प्रेम करती है और अंत में (तृतीयतः) आत्मा और परमात्मा में अभिन्न संबंध स्थापित हो जाता है।

प्रतीकात्मकता - संत कवियों ने अपनी बातों को स्पष्ट करने के लिये प्रतीकों का सहारा लिया है। ये प्रतीक ऐसे होते थे जिनसे सामान्य जन जीवन से परिचित हो जाँय। आप सभी यदि कोई फिल्म देख रहे हों और उसमें कोई बीमार व्यक्ति हो और अचानक दीप बुझता दिखाया जाय तो आप समझ जाते हैं कि वह मर गया। यहाँ 'दीपक' आत्मा का प्रतीक है जो शरीर से निकल जाती है। कुछ अन्य प्रतीक देखें -

मन - मीन, जुलाहा निरंजन आदि।
माया - माता, नारी, बिल्लैया, मैया आदि।
इन्द्रिय - सखी, गौ आदि।
जीवात्मा - पुत्र, योगी, मूसा (चूहा) सिंह, योगी आदि।

उलटबाँसियों का प्रयोग - चूँकि निर्गुण कवियों को सामान्य जनों को अपनी ओर आकर्षित करना होता था, इसलिये वे ऐसी भाषा बोलते थे जिसमें उलटा अर्थ दिखाई देता था - 'एक अचंभा देखा रे भाई
ठाढ़ा सिंह चरावै गाई।'

इस उलटबाँसी में गाय इंद्रियों का ~~प्रती~~ प्रतीक है और सिंह संयमी योगी का। संत कवियों की भाषा जन सामान्य की बोलचाल की भाषा है। अभिव्यक्ति उनके लिए प्रमुख थी। इसके लिए वे कुछ भी करने को तैयार थे। ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, पंजाबी, खड़ीबोली, उर्दू, सिंधी किसी भाषा के शब्दों से उन्हें परहेज नहीं था। वे हमारे देश की भाषायी विविधता को स्वीकारते थे और इसीलिए जनसामान्य तक पहुँचने के लिए उन्होंने हर भाषा को स्वीकारा। हृदय से निकली भावपूर्ण शैली इन कवियों ने अपनायी।

निर्गुण प्रेममार्गी (सूफी) काव्यधारा – निर्गुण भक्त कवियों में से जिन कवियों ने ज्ञान का शुष्क मार्ग न अपना कर भावुक हृदय से परमात्मा को स्मरण किया वे प्रेममार्गी कवि कहलाये। ये सभी कवि 'सूफी' कवि थे जो प्रेमपर आधारित कहानियों को जन सामान्य तक पहुँचाने का कार्य किये। सूफी सूफी शब्द की व्युत्पत्ति के पीछे कई अनुमान लगाये जाते हैं –

(i) मुसलमानों का पवित्रतीर्थ मदीना की मस्जिद है। इसके सामने वाले चबूतरे को सुफ्फा चबूतरा कहते हैं। इस पर बैठने वाले फकीरों को सूफी कहा गया।

(ii) सूफी शब्द की व्युत्पत्ति 'सफा' से मानी जाती है। इसका अर्थ पवित्र और शुद्ध आचरण है। इस प्रकार पवित्र आचरण करनेवाला सूफी कहलाया।

(iii) सर्वाधिक मान्य मत यह है कि सूफी शब्द का संबंध 'सूफ' से है जिसका अर्थ है– ऊन। सूफी लोग सफेद ऊन से बने हुए चोंगे पहनते थे इसलिए सूफी कहलाए।

सूफी काव्य धारा के अंतर्गत परमात्मा को वे प्रियतम मानते थे। सूफी प्रेम पद्धति में ईश्वर को नारी (प्रेमिका) और जीवात्मा (साधक) को पुरुष (प्रेमी) के रूप में कल्पित किया जाता है। जायसी, कुतुबन, मंझन प्रसिद्ध सूफी कवि हैं।

सूफी काव्य की मुख्य विशेषतायें इस प्रकार हैं।

(1) प्रेमकथाओं का वर्णन – अधिकांश सूफी कवियों ने हिन्दू घरों में प्रचलित प्रेमकथाओं को अपनी रचना का विषय बनाया। जबकि अधिकांश सूफी कवि मुसलमान थे। हिन्दू नायिकायें जैसे पद्मावती, मृगावती, चित्रावली मधुमालती उनके ग्रंथों का विषय बनीं। उनके द्वारा हिन्दू संस्कृति का चित्रण किया गया है।

(2) लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की व्यंजना – इन प्रेमकथाओं में सांसारिक प्रेम के द्वारा ईश्वरीय प्रेम की अभिव्यक्ति की गई है। साधक आत्मा अपनी प्रियतमा (परमात्मा) के प्रेम में पड़कर उसके नजदीक जाना चाहता है।

(3) रहस्यवादी भावना – ये कवि निराकार ब्रह्म की साधना करते थे इसलिये ये रहस्यवादी माने गये। इनके अनुसार यह संसार उस परब्रह्म की छाया है। इस पूरी सृष्टि में जो कुछ सुंदर है और सुशोभित है, वह परमात्मा का प्रतिबिम्ब है।

(4) मसनवी शैली – इन कवियों ने भारतीय पद्धति का अनुकरण न करके फारसी मसनवी शैली अपनाई। इसके अंतर्गत कथा सर्गों में न विभक्त करके लगातार चलती रहती है। सूफी कवियों ने दोहा-चौपाई छंदों का मिश्रणकरके रचना की। बाद में तुलसीदास ने भी यही शैली अपनाई। जायसी ने 'पद्मावत' पहले लिखी है तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' बाद में लिखी।

(5) भाषा-शैली – सूफी कवियों ने अवधी भाषा का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। उसमें भी पूर्वी अवधी का अधिक प्रयोग किया। ऐसा करना उनकी मंशा जनसामान्य के निकट होने की थी। दोहे-चौपाई का उपयोग छंदों में किया गया। अलंकारों में, समासोक्ति, अन्योक्ति, और उत्प्रेक्षा है। इसके अतिरिक्त उपमा, रूपक, विरोधाभास जैसे अलंकार का भी प्रयोग हुआ है। लोगों ने इन रचनाओं का भरपूर आनंद लिया। हिन्दू और मुसलमान इन रचनाओं के माध्यम से निकट आए।

प्रमुख सूफी कवि – मलिक मुहम्मद जायसी भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय (5) सूफी कवि रहे हैं। उन्होंने रतनसेन और पद्मावती के माध्यम से जीवात्मा और परमात्मा के प्रेम, उनकी प्राप्ति में बाधायें तथा अंततोगत्वा एक विरक्ति में अवसान का चित्रण किया है। इनके अतिरिक्त 'मृगावती' के रचनाकार शेख कुतुबन, 'मधुमालती' के कवि मंझन, 'चित्रावली' के रचयिता उसमान भी प्रमुख सूफी कवि हैं। इन कवियों में कुछ समानताएँ हैं। इन्होंने कथा के आरंभ में गुरु की वंदना की है और स्वयं का परिचय भी दिया है। कथा की रचना का उद्देश्य भी बताया है। रचना में समकालीन शासक का भी उल्लेख है। नैतिक उपदेश दिया गया है ताकि पाठक एक उच्च आदर्श का अनुसरण करें। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि सूफी कवियों ने प्राय: उन कथानक रूढ़ियों का पालन किया है जिनका भारतीय कवि पालन करते रहे हैं। इन रूढ़ियों में चित्र देखकर मुग्ध होना, स्वप्न में प्रिय के दर्शन पाना, पशु पक्षी की बोली समझना और मंदिर या चित्रशाला में प्रेमी युगल का मिलना आदि शामिल हैं। कुछ नई कथानक रूढ़ियाँ ईरानी साहित्य से भी ली गई हैं और – परियाँ, ~~राक्षस~~ देवों, उड़नेवाली राजकुमारियाँ तथा राजकुमारी का प्रेमी को पकड़वा देना आदि। इसमें कथा तत्व की प्रधानता रहने के कारण यह जनमानस में पैठ बना सकी। यह राज्याश्रय एवं धर्माश्रय को छोड़कर लोकाश्रय में पनपा। लोकभूमि में पालन-पोषण होने के कारण इसमें लोकमन की साहित्यिक अभिव्यक्ति हुई।

कृष्णभक्तिकाव्य – कृष्ण भक्तिकाव्य एक लंबे समय तक चलनेवाली परंपरा है। कृष्ण का व्यक्तित्व बहुआयामी रहा है। एक ओर तो ग्वाल-बालों के साथ गोचारण करते हुए लोकतत्व से जुड़े नजर आते हैं तो दूसरी ओर गोपियों के साथ रास करते हुए प्रेमी रूप में सामने आते हैं। कहीं वे दुष्टों का संहार करते हुए वीर योद्धा बने हैं तो कहीं विशुद्ध राजनयिक बनकर महाभारत के सूत्रधार ~~बनकर~~ अपने समय के प्रमुख चर्चित व्यक्तित्ववाले बन गए हैं। अपने जीवनकाल में ही मिथक बन जानेवाले कृष्ण का चित्रण केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि उसने नृत्य, संगीत, चित्र, मूर्ति, लोक समग्र रचना-संसार को अपने घेरे में ले लिया। कृष्ण भक्ति काव्य में कृष्ण का लीला रूप प्रधान है। इसकी ओर कृष्ण भक्ति कवियों का ध्यान अधिक गया है। श्रीमद्भागवत पर आधारित कृष्णकथा में राधा का उल्लेख नहीं है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में राधा उल्लिखित हैं। इन कवियों ने कृष्ण की लीलाओं का गान करते हुए सदैव इस बात का ध्यान रखा है कि वे विशिष्ट हैं। मानव रूप की लीला कर रहे हैं। ~~कृष्ण भक्ति काव्यधारा~~, भक्ति काल की समग्र भक्तिधारा में कृष्ण काव्य का विशेष महत्त्व है। संस्कृत में जयदेव ने 'गीतगोविन्द' की रचना करके कृष्ण भक्ति की परंपरा की शुरुआत की जो विद्यापति की पदावली से होते हुए हिंदी साहित्य में भी चलती रही। इसके प्रमुख कवि सूरदास हैं। कृष्ण भक्ति के प्रचार में वल्लभाचार्य के

'पुष्टि सम्प्रदाय' का बहुत बड़ा योगदान है। सूरदास उन्हीं के शिष्य थे। वल्लभाचार्य के बेटे श्री विट्ठलनाथ ने पुष्टि मार्गी कवियों में से चार कवि — सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास और कृष्ण दास तथा चार अपने शिष्यों — नंददास, चतुर्भुज दास, छीतस्वामी और गोविन्दस्वामी को लेकर 'अष्ट छाप' की स्थापना की। इन आठ कवियों में सूरदास और नंददास सर्वाधिक प्रतिष्ठित हैं। मीराबाई भी इस काव्य धारा की प्रमुख कवयित्री हैं। भागवतपुराण इस काव्य धारा का आधार ग्रंथ है।

कृष्ण भक्तिकाव्य की विशेषताएँ

इस काव्य धारा के सभी कवियों ने कृष्ण के लोकरंजक स्वरूप तथा माधुर्य से पूर्ण लीलाओं का गान किया। प्रारम्भ में सूरदास बाल्य भाव की भक्ति करते थे पर विट्ठलनाथ के कहने पर बाल्य भाव की भक्ति करने लगे।

वात्सल्य का विशद वर्णन - आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है - "बाल सौंदर्य और स्वभाव वर्णन में जितनी सफलता सूर को मिली है, उतनी अन्य किसी को नहीं। वे अपनी बंद आँखों से वात्सल्य का कोना-कोना झाँक आए हैं।" कृष्ण के जन्म से लेकर उनके मथुरा जाने तक के समय को चित्रित करने की अवधि बाल्यकाल की है। इसका विस्तृत वर्णन कृष्ण कवियों ने किया है।

प्रेम का भावुक चित्रण - कृष्ण भक्त कवियों ने लड़कपन की प्रीति से प्रेम की शुरुआत की है जो बाद में परिपक्व हुई। अचानक दर्शन से अथवा स्वप्न में देखने से इस प्रेम की शुरुआत नहीं हुई है। प्रेम के संयोग तथा वियोग दोनों पक्षों के मार्मिक वर्णन कृष्ण काव्य में उपस्थित हैं।

भ्रमरगीत परंपरा - कृष्ण कवियों ने 'भ्रमरगीत' की परंपरा के द्वारा निर्गुण ब्रह्म के उपासकों और सगुण ब्रह्म के अनुयायियों के मध्य तर्क-वितर्क दिखाया है। कृष्ण के मथुरा जाने के पश्चात गोपियाँ उनके विरह में डूबी रहती थीं। कृष्ण ने अपने मित्र उद्धव के द्वारा उन्हें संदेश भिजवाया। उद्धव निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे। उन्होंने गोपियों को भी निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने को कहा। इस पर गोपियाँ उन्हें तो शिष्टाचार वश कुछ नहीं कहती पर उसी समय एक भ्रमर उड़ता हुआ आता है उसे ही लक्ष्य करके उपालंभ (उलाहना) देती हैं। यही काव्य 'भ्रमरगीत' के नाम से प्रसिद्ध हुआ — 'निर्गुण कौन देश को बासी, मधुकर कहि समुझाय, सौंह दै बूझति साँच न हाँसी।' सूरदास की ये पंक्तियाँ उद्धव को निरुत्तर कर देती हैं।

स्त्री की स्वतंत्र सत्ता का चित्रण - मध्यकाल में भी समाज और परिवार के बंधनों में जकड़ी हुई थी, पर कवियों ने गोपियों के रूप में ऐसी नारी का वर्णन किया जो समाज या परिवार के बंधनों से मुक्त होकर प्रेम करती हैं। मीरा भी स्त्री स्वातंत्र्य की उद्घोषिका हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा — 'मेरो तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।'

कृष्णभक्तिकाव्य अधिकांशतः ब्रजभाषा में रचित है। इस काव्यधारा में शृंगार रस की प्रधानता है। संतान विषयक रति तथा दांपत्य रति दोनों का अद्भुत वर्णन इस काल के कवियों ने किया है। अलंकारों की भरमार इनकी कृतियों में है।

कृष्ण काव्य की लम्बी परंपरा आज भी गृहस्थ जीवन को सहज, सरल, नैतिक और गरिमामय रखने में सहायक है। कर्मयोग का वास्तविक ज्ञान हमें इस काव्य की सम्पूर्ण धारा में प्राप्त होता है। ब्रह्मज्ञान से लेकर लौकिक जीवन तक का रूप अपने विविध स्तरों पर यहाँ देखना हो तो, कृष्ण काव्य का पढ़ना जरूरी है।

रामभक्तिकाव्य –

रामभक्ति साहित्य में राम के लोकरक्षक रूप की प्रधानता रही है। इस काव्यधारा में आदर्श रूपों/व्यक्तित्वों पर बल दिया गया है। आदर्श शासन, शासक, पुत्र, पिता, भाई, पत्नी, मित्र, सेवक सभी का चित्रण इस काव्य परंपरा में है। जिस प्रकार वल्लभाचार्य ने कृष्ण भक्ति का प्रचार किया उसी प्रकार रामानंद ने रामभक्ति का प्रचार किया। गुरु रामानंद ने राम के शील, शक्ति और सौन्दर्य से युक्त मर्यादापूर्ण जीवन को प्रस्तुत कर जनता के सामने एक आदर्श चित्र प्रस्तुत किया। प्रभु के इस रूप ने तत्कालीन लोकमानस में एक नयी आशा का संचार किया। आज भी लोग जब आदर्श शासन व्यवस्था का चित्रण करते हैं तो 'रामराज्य' का नाम लेते हैं।

इस काल के प्रमुख प्रतिनिधि कवि तुलसीदास हैं। इनके अतिरिक्त केशवदास, अग्रदास, नाभादास, ईश्वरदास, रामानंद जैसे कवियों ने भी राम की उपासना के लिए काव्य रचना की। रामभक्ति शाखा की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –

(1) राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित करना रामभक्ति शाखा के कवियों का प्रमुख उद्देश्य रहा है। उन्हें विष्णु का अवतार माना गया है –

'विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥'

तुलसीदास प्रमुख राम भक्त कवि हैं। उन्होंने राम के आदर्श रूप का चित्रण किया है।

(2) समन्वय की भावना को स्थापित करने की दिशा में रामभक्त कवियों विशेषकर तुलसीदास ने विशेष महत्त्वपूर्ण प्रयास किये हैं। उन्होंने निर्गुण और सगुण, ज्ञान और भक्ति, शैव और वैष्णव, ज्ञान और भक्ति तथा कर्म और ज्ञान का सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया है।

जनजीवन के कवि – रामभक्त कवियों ने अपने आराध्य की उपासना में समाज की उपेक्षा नहीं की है। तुलसीदास के रामचरितमानस में हर प्रमुख अवसर पर स्त्री और पुरुष दोनों की उपस्थिति दर्शायी है। समाज के हर क्षेत्र के लोगों से राम का संपर्क दिखाया गया है। राम ने भील, वानर, भालू आदि जाति के लोगों के सहयोग से रावण से युद्ध जीता था। वे किसी राजा से सहायता माँगकर युद्ध नहीं करते। उन्होंने लोक मंगल के लिए अहल्या का उद्धार किया, ताड़का का वध किया, बालि का वध किया, राक्षसों का संहार किया तथा सबके लिए सुन्दर शासन की स्थापना की। तुलसीदास ने राम के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम का विराट स्वरूप सबके समक्ष प्रस्तुत किया है।

रामकाव्य में प्रयुक्त कलापक्ष – यदि कलापक्ष पर गौर किया जाय तो रामभक्ति काव्य में शैलीगत विविधता है। तुलसीदास ने तो अपने युग की प्रायः सभी काव्य शैलियों को अपनाया है। वीरगाथाकाल की छप्पय पद्धति, विद्यापति और सूर की गीति पद्धति, गंग आदि भाट कवियों की कवित्त-सवैया पद्धति, जायसी की दोहा-चौपाई पद्धति सभी तुलसीदास की रचनाओं में विद्यमान है। कुछ कवियों ने संवाद पद्धति और रीति-पद्धति का अनुसरण किया है। रामकाव्य अधिकांशतः प्रबंध काव्य है। प्रबंध काव्यों में जीवन के विविध रस सम्मिलित रहते हैं इसलिए रामकाव्य में नवों रसों के उदाहरण मिल जाते हैं। जहाँ तक भाषा का प्रश्न है तो अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं में रामकाव्य लिखे गये हैं। तुलसीदास और केशवदास दोनों कवियों की भाषा पर अद्भुत पकड़ थी। आज भी तुलसी की चौपाइयाँ कहावतों और दृष्टांतों की तरह प्रयुक्त होती हैं। तुलसीदास उत्प्रेक्षा के सिद्धहस्त प्रयोग के लिये प्रसिद्ध हैं। यह उनका प्रिय अलंकार है। रूपक और उपमा का भी उन्होंने प्रयोग किया है।

रामभक्ति काव्य धारा तीन रूपों में प्रवाहित हुई है – (1) संतों तथा जैनियों के द्वारा रचित रामकाव्य, (2) रसिक-सम्प्रदाय के कवियों का रामकाव्य और नैतिक मूल्यों पर आधारित रामकाव्य। यहाँ हमलोगों ने तीसरे प्रकार के रामकाव्य के बारे में चर्चा की। यह इतना लोकप्रिय है कि आज भी रामलीला के द्वारा हम इसे स्मरण करते हैं। अगली इकाई में रीतिकाल के कवियों और रीतिकाव्य की विशेषताओं से आपका परिचय कराया जायेगा।

[signature]

विभागाध्यक्ष – हिन्दी विभाग
श्री गुरु गोविन्द सिंह कालेज
पटना सिटी।
संपर्क नं० – 9431881251